

2) कीर्तन - ईश्वर के गुणों, लीला का गान करना कीर्तन है।
लखनऊ के जीम सचिवाणी है जो राम की लीला का गान नहीं करती -

रसना सांघिन वदन बिल, जे न जपहि हरि नाम ।
3) स्मरण - भगवान की लीला, गुण, रूप आदि की स्मृति ही स्मरण है। मवसागर पार करने के लिए राम नाम का स्मरण ही सहाय है -

सुनिरत श्री रघुवीर की बौंहै।
हेत सुगम भव उदयि अगम प्रति, कोउ लौंवात कोउ उत्तर काहै ॥

4) पाद-सेवन - ईश्वर और उनके चरणों की सेवा पाद-सेवन के अर्न्तगत आता है। जिन्हें भक्त भगवान की सेवा में स्वयं को समर्पित कर देते हैं -

कर नित करहिं रामपद पूजा राम भरोस ह्यर्थ नहिं पूजा ॥

5) अर्चन - भगवान की विधि-पूर्वक पूजा करना ही अर्चन कहलाता है। पूजन की चर्चा कई स्थलों पर कुलमीदास जी के द्वारा की गई है। सीता जी महापार्वती की पूजा करती हैं -

कुलमी भवासिहि गुजि पुनि-पुनि मुदित मन-मन्दिर चली ।

6) वन्दन - भगवान की स्तुति करना वन्दन-भक्ति है। कुलमीदास जी ने सर्वत्र इस भक्ति को महत्व दिया है -

वन्दऊं राम लखन वैदेहि । जे कुलमी के परम लखेही ॥

7) दास्य - भगवान की सर्व-समर्प स्वामी मान कर स्वयं को उनके दाल के रूप में प्रकृत करना, दास्य भक्ति है। भक्त को ईश्वर के समक्ष अपनी लघुता का आभास होने लगता है। कुलमी की सदैव यही कामना है -
अस अजिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति भोरे ॥

8) सरण्य - इस भक्ति में भक्त आराध्य को अपना सरता मानकर उनकी आराधना करता है। कुलमीदास में दास्य भाव की प्रधानता है क्योंकि

वे दास्य भक्ति को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में सरल भाव की भक्ति के दर्शन मुख्य भक्त सुरदास की भाँति नहीं होते।

97 आत्मनिवेदन - अपने ईश्वर के प्रति पूर्ण हृष से समर्पित हो जाना ही आत्मनिवेदन है। भक्त अपनी सारी चिन्ताओं और भय से मुक्त होता है क्योंकि वह अपना जीवन ईश्वर के चरणों में सच्चे बन दे समर्पित कर देता है। गोस्वामी जी की 'चिनयपत्रिका' इसका उदाहरण है, जिसमें उन्होंने विभिन्न प्रकार से आत्मनिवेदन किया है।

समग्रतः महाकवि कुलसीदास महान भक्त की श्रेणी में आते हैं। उनकी रचनाओं में भक्ति रस की चारा सर्वत प्रवाहित हो रही है। भक्ति के स्वल्प, भक्ति की कोशियाँ, भक्तों के प्रकार, भक्ति के साधन सभी का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक निरूपण इसमें प्राप्त होता है। निरानन्दे क गोस्वामी कुलसीदास जी भक्ति-रस के आचार्य हैं और भक्ति-युग के प्रतिनिधि कवि।